संत आगस्टाइन (St. Augustine) (354-430 ई.)

संत आगस्टाइन का जन्म तगस्ते नामक उत्तर अफ्रीका के एक नगर में हुआ था। उनकी माँ मोनिका से उन्हें ईसाई धर्म की शिक्षा मिली। इसके कारण कला को क्षणिक, विलासितापूर्ण, कामुक और भ्रमात्मक आदि कह कर निन्दा की, कला के विषय में इनका दर्शन अन्धात्मक है। 'कलाएं असत्य होते हुए भी सत्य हैं' असत्य क्योंकि ये भ्रम उत्पन्न करती हैं। किन्तु कला अपने प्रयत्नों से सत्य प्राप्ति की ओर बढ़ती है। आगस्टाइन ने कहा कि रंगमंचीय मनोरंजन कामुकतापूर्ण है। क्योंकि होमर ने तो देवी-देवताओं को आपस में झगड़ते हुए, द्वेष-भाव से युक्त, कामुक तथा एक दूसरे की निन्दा करते अंकित किया है। जब मानव अपने 'आदर्श' को ही ऐसे अधम कार्य करते देखेगा तो उसका नैतिक पतन होना स्वाभाविक ही है। उन्होंने यह भी कहा कि जितनी भी कलाएँ है वे जब तक परमात्मा का प्रशस्ति गान करने तक सीमित रहें तब तक तो उचित है, किन्तु जब वे मनोरंजन एवं आनन्द हेतु काम में लाई जाने लगें तो निष्फल व नगण्य है।

आगस्टाइन ने परमेश्वर की तुलना सूर्य से की है। जैसे सूर्य भौतिक वस्तुओं पर प्रकाश डालकर उन्हें आँखों हेतु दृश्यमान बनाता है। उसी प्रकार परमेश्वर हमारी आत्मा को प्रकाश

कराता है, जिससे हम नित्य सत्य को ग्रहण कर सकें। आगस्टाइन का ऐन्द्रिक ज्ञान के प्रति दृष्टिकोण भी बहुत कुछ प्लेटो के समान ही है। ऐन्द्रिय ज्ञान संवेदों पर आश्रित होने के कारण निम्नतम स्तर का ज्ञान है। संवेदन हमें तभी प्राप्त होते हैं जब आत्मा किसी न किसी इन्द्रिय को ज्ञानोपकरण के रूप में प्रयुक्त करती है। जब भी आत्मा की क्रियाशीलता का अतिरेक किसी इन्द्रिय विशेष की ओर होता है, तब हमें उस इन्द्रिय से सम्बद्ध संवेदों की प्राप्ति होती है। इन्होंने कहा कि "कलाएँ असत्य होते हुए भी सत्य है" इस प्रकार द्वन्द्वात्मक दर्शन प्रस्तुत किया। यह विचार उन्होंने धर्म एवं सौन्दर्य दर्शन में सन्तुलन लाने हेतु प्रस्तुत किया था। असत्य को परिभाषित करते हुए इन्होंने कहा कि "असत्य वह है जो सत्य का होने का भ्रम उत्पन्न करे"। कविता, प्रहसन, और अभिनय इसी प्रकार के असत्य हैं। वस्तुतः ये मनोरंजन की प्रवृत्ति से उत्पन्न होते है।

आगस्टाइन ने कहा कि सुसंगति मानवीय प्रकृति को आनन्द देती है। भ्रमात्मक वस्तुएँ सत्य नहीं है। इन वस्तुओं की स्वाधीन सत्ता उनकी दैवीय उत्पत्ति को प्रतिबिम्बित करती है। आगस्टाइन ने ज्यामितीय आकारों में सौन्दर्य माना है विषम त्रिभुज, समत्रिभुज, समचतुर्भुज एवं गोलाकार में सर्वाधिक सौन्दर्य है। किन्तु सौन्दर्य को वे सामंजस्य, सन्तुलन और अनुपात की सीमा से बाहर नहीं निकाल सके। समरूपता से अधिक महत्व

Scanned with CamScanner